विचारायन

हिन्दी विभाग की वार्षिक पत्रिका

2022-2023

हिन्दी विभाग
गार्गी महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

हिन्दी साहित्य परिषद
(सत्र 2022-23)

प्रिय विद्यार्थियों,

गार्गी महाविद्यालय का हिंदी विभाग अपनी वार्षिक पत्रिका "विचारायन" का प्रकाशन कर रहा है। पत्रिका का नियमित प्रकाशन छात्राओं की साहित्यिक छवि को बढ़ावा देता है, उनकी सृजनात्मक क्षमता को निखारता है। छात्राएं समसामयिक विषयों को लेकर अपने भावों को कविता, कहानी लेखों के माध्यम से व्यक्त करती हैं। इस वर्ष भी यह पत्रिका छात्रों को सृजनात्मक एवं रचनात्मक प्रेरणा का संचार करने के लिए पर्याप्त है पूर्व की भांति पत्रिका का यह अंक भी उपयोगी और ज्ञानवर्धक रहेगा।

मैं सभी विद्यार्थियों को,

हिंदी विभाग को अपनी शुभकामनाएं देती हूं।

प्रो० संगीता भाटिया

प्राचार्या,

गार्गी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में गार्गी महाविद्यालय हिंदी विभाग अपनी वार्षिक ई-पत्रिका विचारायन के नए अंक का प्रकाशन कर रहा है। पत्रिका के इस चतुर्थ नवीनतम अंक को आपके सम्मुख रखते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। विद्यार्थियों ने प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक आलेखों के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना साहित्यिक योगदान देकर पत्रिका की गरिमा को बढ़ाया है। इस अंक की सफलता के लिए मैं अपने प्यारे विद्यार्थियों का हृदय से धन्यवाद करती हूं और अपनी शुभकामनाएं देती हूं कि भविष्य में भी साहित्यिक विषयों पर अपनी रचनात्मक भागीदारी इसी प्रकार बनाए रखें। पत्रिका को और अधिक बेहतर बनाने हेतु आप सभी के बहुमूल्य सुझावों और मनोभावों का सदैव स्वागत रहेगा। इन्हीं मंगल शुभकामनाओं के साथ एक बार पुनः

आप सभी का बहुत-बहुत आभार।

शुभकामनाओं सहित!

डॉ मीना (संयोजिका)
हिन्दी साहित्य परिषद
गार्गी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

गार्गी महाविद्यालय के हिन्दी विभाग की अपनी विभागीय वार्षिक ई-पत्रिका 'विचारायन' के इस चतुर्थ नवीनतम अंक को हम सब के बीच पाते हुए मुझे अपार आत्मीय प्रसन्नता हो रही है। इस पत्रिका के माध्यम से हमारे सभी विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का स्वर्णिम अवसर मिलता है। इस पत्रिका के ऑनलाइन अंक की सफलता के लिए मैं अपने सभी विद्यार्थियों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं और आप सब को अनंत शुभकामनाएं देता हूं। आशा करता हूँ कि निकट भविष्य में भी आप सभी विद्यार्थी साहित्यिक और समसामयिक विषयों पर निरंतर अपनी लेखनी के माध्यम से रचनात्मक एवं बौद्धिक योगदान देते रहेंगे। इस ऑनलाइन पत्रिका को भविष्य में और अधिक बेहतर एवं उपयोगी बनाने हेतु आप सब के बहुमूल्य सुझावों और विचारों का सदैव खुले मन से स्वागत रहेगा।

इस पत्रिका के सभी सहभागी सदस्यों को अनंत मंगलकामनाएं और हार्दिक बधाइयाँ।

अनंत शुभकामनाएं

डॉ श्रीनिवास त्यागी (सह-संयोजक)
हिन्दी साहित्य परिषद
गार्गी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

हिंदी विभाग की पत्रिका 'विचारायन' के नए वार्षिक अंक पूर्ण होने की बधाई! इस पत्रिका के सफल संपादन के लिए डॉ. मीना जी एवं सम्पादक मण्डल का प्रयास सराहनीय रहा ।

भारतीय ज्ञान और संस्कारों का आधार हिंदी भाषा रही है । सदियों से हिंदी भाषा में रचित विविध ग्रंथ भारतीय जनमानस को नयी दिशा दे रहे हैं । यह हर्ष का विषय है कि आज तकनीक का उपयोग करते हुए हिंदी अधिकाधिक लोगों तक पहुँच रही है और विश्वभर में हिंदी के प्रति लोगों की रुचि बढ़ी है । 'विचारायन' पत्रिका में छपे विविध साहित्य विधाओं के माध्यम से इस सुमधुर भाषा के विभिन्न आयामों को पाठकों तक पहुँचाने की पहल अतुलनीय है ।

मुझे उम्मीद है कि 'विचारायन' पत्रिका सभी हिंदी प्रेमियों को अपने साथ जोड़ते हुए हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाने में इसी ऊर्जा और उत्साह के साथ पाठकों तक निरंतर पहुँचती रहेगी। 'विचारायान' पत्रिका के 6 वर्ष पूर्ण होने के शुभ अवसर पर गार्गी महाविद्यालय के हिंदी विभाग के समस्त शिक्षकगण एवं छात्राओं को बधाई एवं शुभकामनाएँ ।

डॉ कृष्णा मीणा
विभाग प्रभारी, हिन्दी विभाग
गार्गी महाविद्यालय

हिन्दी की अनेक विधाओं में ऐतिहासिक, तार्किक, समसामयिक आदि विविध विषयों पर अत्यंत बेहतरीन रचनाओं के जरिए गार्गी महाविद्यालय के हिन्दी विभाग की वार्षिक पत्रिका "विचारायन" को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रही हूं। "विचारायन" पत्रिका हमेशा से विभाग की छात्राओं के लिए एक खुला मंच प्रदान करती आई है जिसमें छात्राएं किसी शैली, विधा, विषय आदि के बंधनों से मुक्त होकर अपने विचार तथा भावनाओं को शब्दों में पिरोया है।

पत्रिका के प्रकाशन में डॉ मीना मैम से शुरू से ही प्रेरणा एवं सहयोग मिला है, जिसके लिए हम उन्हें हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। पत्रिका के सभी रचनाकार तथा लेखक साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं तथा विचारों से पत्रिका को सफल बनाया है तथा सभी ग्राफिक डिजाइनर, संपादक, प्रूफ शोधक धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने अपनी अतुलनीय कलाकृति के माध्यम से पत्रिका को अलंकृत करने में अपना कीमती योगदान दिया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि विविधता में एकता को दर्शाती हुई यह पत्रिका अपने बहुआयामी दायित्व में पूर्ण रूपेण सफलता प्राप्त करेगी।

पत्रिका की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं!

सोनम यादव (अध्यक्षा)
हिन्दी साहित्य परिषद
गार्गी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

शिक्षक गण

1. प्रो. मीना
2. प्रो. श्री निवास त्यागी
3. प्रो. वीणा शर्मा
4. डॉ. अनीता यादव
5. प्रो. स्वाति श्वेता
6. डॉ. पार्वती शर्मा
7. डॉ. कृष्णा मीणा
8. डॉ. आरती पांडेय
9. डॉ. दीपा
10. डॉ. श्रवण कुमार

छात्र - संघ

अध्यक्षा
सोनम यादव

उपाध्यक्षा
राधा सिंह

महासचिव
रचना कुमारी

सांस्कृतिक सचिव
मनीषा

मनीषा
कुलानुशासक

स्मिता राज
कोषाध्यक्ष

कक्षा-प्रतिनिधि

एकता
तृतीय वर्ष

हंसिका
तृतीय वर्ष

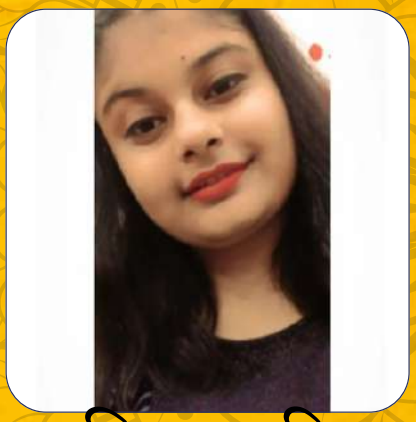

कनिका भाटिया
द्वितीय वर्ष

दामिनी तिवारी
द्वितीय वर्ष

मोनिका गुप्ता
प्रथम वर्ष

रितु
प्रथम वर्ष

संपादक मण्डल

१. सोनम यादव (अध्यक्षा)
२. प्रियंका मण्डल (प्रथम वर्ष)
३. गीतिका घई (द्वितीय वर्ष)
४. मनीषा (तृतीय वर्ष)

प्रूफ़ शोधक

१. राधा सिंह (द्वितीय वर्ष)
२. मनीषा (तृतीय वर्ष)
३. रचना कुमारी (द्वितीय वर्ष)

ग्राफिक डिजाइनर

१. सोनम यादव (तृतीय वर्ष)
२. कीर्ति मिश्रा (प्रथम वर्ष)

अनुक्रमणिका

सं.	नाम	विषय	वर्ष
१.	कृति जैन	लिखना चाहती हूं	प्रथम वर्ष
२.	भावना रौतेला	फौजी	तृतीय वर्ष
३.	गीतिका	प्रकृति	द्वीतीय वर्ष
४.	निकिता मिश्रा	गुरु से ही गुरूर	तृतीय वर्ष
५.	प्रेरणा बठोले	प्रेम वर्षा	द्वितीय वर्ष
६.	सोनिका	बावला दिमाग	प्रथम वर्ष
७.	प्रियंका सिंह	दोस्ती	द्वितीय वर्ष
८.	मनीषा	मैं कौन हूं	तृतीय वर्ष
९.	निशा	पुराना रिश्ता	प्रथम वर्ष
१०.	श्रुति	आजादी	द्वितीय वर्ष
११.	प्रेरणा झा	कॉलेज के सपने	तृतीय वर्ष
१२.	कुसुम लता	कर्मचक्र	द्वितीय वर्ष
१३.	एकता	यादें	तृतीय वर्ष
१४.	मोहिनी शुक्ला	रविवार	प्रथम वर्ष
१५.	सोनम यादव	मेरी भावनाएं	तृतीय वर्ष
१६.	कनिका	भारत माँ की आँखों के तारे	द्वितीय वर्ष
१७.	शान्या दास	प्रेम में एक स्त्री	तृतीय वर्ष
२८.	स्मिता राज	बचपन	प्रथम वर्ष

सं.	नाम	विषय	वर्ष
१८	सिमरन	प्रकृति	प्रथम वर्ष
१९	जिज्ञासा पांडेय	मैं कलरव हूं	तृतीय वर्ष
२०	अंजलि पाल	एक भीड़	द्वितीय वर्ष
२१	प्रियांशु कुमारी	नाम रोशन	प्रथम वर्ष
२२	जन्नत फरजाना नाहिद	पूछा जो मैंने खुदा से	प्रथम वर्ष
२३	साक्षी मौर्य	क्या शब्द लिखूं	प्रथम वर्ष
२४	काजल कुमारी	मेरे सपने	तृतीय वर्ष
२५	शालू	कुछ ऐसा है मेरा परिवार	द्वितीय वर्ष
२६	खुशी तोमर	माँ	प्रथम वर्ष
२७	जया शर्मा	आजाद परिंदा	तृतीय वर्ष
२८	वर्षा सिंह	वक्त कहां	प्रथम वर्ष
२९	पूजा	शहीदों को शत् शत् नमन	तृतीय वर्ष
३०	कीर्ति मिश्रा	प्रकृति	प्रथम वर्ष
३१	हिमानी बैसोया	आगे बढ़ चले हम	प्रथम वर्ष
३२	प्रियंका मण्डल	समय का सदुपयोग	प्रथम वर्ष
३३	लवली अप्राजिता	उड़ान	द्वितीय वर्ष
३४	नियाशा	मेरी आँखों ने भी एक ख्वाब देखा है	द्वितीय वर्ष
३५	अदिति शर्मा	वो लड़की	तृतीय वर्ष
३६	प्रियंका मण्डल	अंग्रेजी- एक महामारी	प्रथम वर्ष
३७	डौली	कैसे लिखूं?	प्रथम वर्ष
३८	अंतस करन	मन्नू भंडारी	तृतीय वर्ष

लिखना चाहती हूँ!!

मैं भी कुछ लिखना चाहती हूँ,
कलम द्वारा कुछ कहना चाहती हूँ।
दिल करता है पन्ने पर उतार दूं,
सारी ख्वाहिशें दिल की,
पर डरती हूं,मजाक नहीं बनना चाहती हूँ।
मन में एक तूफान-सा उठ रहा है,
जो कुछ भी है मन में,
किसी से कहना चाहती हूँ।
पर विश्वास नहीं होता ,
दुनिया के इन दोगले चेहरों पर,
इसलिए पन्ने को ही अपना,
दोस्त बनाना चाहती हूँ।
यह तो नहीं तोलेगा ना मुझे,
इस दुनिया के झूठे दिखावों से,
मेरे दिल की सारी बात सुनेगा,
जो भी मैं कहना चाहती हूँ।
मैं क्यों डरती हूँ!
क्यों मैं घबराती हूँ!
दुनिया के इस दस्तूर से,
सब कुछ तुझे बताना चाहती हूँ।
मेरी खूबियाँ! मेरी कमियाँ!
सब तुझे बताऊंगी।
बस ये वादा कर कि,
तू नहीं करेगा दुनिया-सा सलूक मुझसे ,
मेरे अंदर विचारों का जो गुबार है,
तुझे सुनना चाहती हूं।

मैं भी कुछ लिखना चाहती हूँ।।
कलम द्वारा कुछ कहना चाहती हूँ।।

कृति जैन
प्रथम वर्ष

फौजी

दिन भर जब सोया करता था, तेरी डांट मुझे जगाया करती थी।
प्यार भी मुझे खूब किया, मां, अपना निवाला मुझे खिलाती थी।
समय का चक्र यूं घूमा, पाकर मैं सब खो गया।
बुढ़ापे का सहारा बनता, साथ बीच में छोड़ दिया।
मुझे माफ करना मां, यह वादा मैंने तोड़ दिया।।२।।
मेरे छोटे भाई सुन, कंप्यूटर तुझे दिला न पाया।
बहुत नादान है रे तू, दुनियादारी सिखा न पाया।
अगले माह परीक्षा तेरी, कुछ सवाल तुझे समझाने थे।
अगली दफा जब आता मैं, नए मंजर तुझे दिखाने थे।
हर वक्त तेरा साथ देता, पर वक्त ने साथ छोड़ दिया।
मुझे माफ करना भाई, यह वादा मैंने तोड़ दिया।।२।।
बहन तू उदास मत हो, राखी से सजी़ कलाई है।
थोड़ा सा लहू निकला है, बस छाती पर गोली खाई है।
लड़का मैंने देख लिया, शहनाई सुननी बाकी है।
कंगन, चूड़ी खरीद लिया, लहंगा-चुन्नी बाकी है।
तुम भी सुनो अर्धांगिनी! मांग से सिंदूर हटाना मत।
टूट गई हो तुम पूरी, बस यही दुनिया को जताना मत।
साथ बिताया जो लम्हा, याद तुम्हें जरूर आएगा।
मुस्कुराती रहना तुम यूंही, बच्चों में गुरूर आएगा।
सातों जन्म साथ रहता, सफर बीच में छोड़ दिया।
मुझे माफ करना प्रिये! यह वादा मैंने तोड़ दिया।।२।।

पापा आज भी खामोश होंगे, इस खामोशी में सैलाब होगा।
हाथ में फोटो ,आँख में आंसू, पर इस दिल में इंकलाब होगा।
बिन बताए एक बार चला गया, पापा ने खूब मार लगाई थी।
याद है मुझे वो दिन, ना पानी, ना रोटी मुझे खिलाई थी।
गुस्से में वो बहुत थे, बिन बताए कहीं ना जाने का वादा जोड़ दिया।
मुझे माफ करना पापा, आज यह वादा मैंने तोड़ दिया।।२।।
तोड़ दिए बहुत से वादे मैंने, लौटकर फिर से आऊंगा।
क्या औकात है इन दरिंदों की ,इनको फिर से दिखाऊंगा।।२।।

भावना रौतेला
(तृतीय वर्ष)

प्रकृति

आज फ़िर याद दिलवाया जा रहा है।
एक नाम है,
जिससे हुआ पूरी संसार का निर्माण है।
वो ही खूबसुरती की सही पहचान हैं,
और वही जीवन दान है,
लेकिन मनुष्य बनता जा रहा है
उसके विनाश का दृष्टांत है।
शायद मनुष्य को नहीं पता,
जीवन का प्रकति से ही
अंत और आरंभ हैं।।

गीतिका घई
(द्वितीय वर्ष)

गुरु से ही गुरुर है

हम तो बस एक जरिया हैं,
जो पार करेगा आपके ज्ञान के दरिया को।
हम तो वो आगाज़ हैं,
जिसका वजूद सिर्फ आप हैं।

बचपन का वो डंडा सबको किया,
याद है आज भी वो बीते हुए दिन जब,
हम बच्चे आपस में लड़ते थे ,
और डांटने के डर से रात-रात भर पढ़ते थे।

बहानों का भी अपना एक चलन था,
पर क्या करें! कभी बना ना सके,
क्योंकि हमेशा से आपको बैक बेंचर्स से जलन था।

अगर हम दीया हैं, तो आप वो बाती हैं,
जो अपनी लौ से
अंधेरों में भी एक उम्मीद की किरण जगाते हैं।
हम तो वो बिखरे हुए मोती थे,
जिसे ज्ञान के धागों में आप सभी ने पिरोया।

मच रहा था कॉलेज में चारों ओर शोर,
क्योंकि हर जगह थी क्रेडिट की होड़
सभी अपनी-अपनी लगा रहे थे सोर्स,
क्योंकि बचा हुआ था पूरा का पूरा कोर्स।
इसलिए क्या हुआ अगर एकआधा रह गया,
क्योंकि पास होना भी तो आप ने ही सिखाया।

मां बाप ने तो इंसान बनाया,
पर इंसानियत का पाठ तो आपने ही पढ़ाया ।
कहते हैं, मां बाप की सेवा से स्वर्ग मिल जाता है।
मैं कहती हूं,
ऐसा स्वर्ग किस काम का जो मरने के बाद दिख जाए,
करो सम्मान उन सभी गुरुओं का,
क्या पता तभी जीते जी स्वर्ग मिल जाए।

गुरु से ही गुरुर है,
इसमें मेरा क्या कसूर है?
शिक्षक से ही रक्षक है,
फिर भी राष्ट्र क्यों भक्षक है?

आप हैं तो ना जाने कहां खड़ी मिलूंगी?
आप नहीं हैं तो ना जाने कहां पड़ी मिलूंगी?

धर्म गुरु को छोड़ ,कर्म गुरु को अपना लो दोस्तों,
क्योंकि ये अशांति की मिसाल नहीं,
यह शांति की मशाल है।

सुन लो बहनों, बस एक बात,
भले ही कितनी क्रीम पाउडर हम पे लगे,
असली मार्गदर्शन तो गुरु ही देंगे।
अगर गुरु से ही राष्ट्र का निर्माण है,
तो क्यों ना कहूं ,हां मुझे अभिमान है।
हां, मुझे अभिमान है,
हां, मुझे अभिमान है।

निकिता मिश्रा
तृतीय वर्ष

प्रेम वर्षा

जब पहली बार जाना मैंने प्रेम को
तब समझदारी भी नहीं थी।
कि, जब पहली बार जाना मैंने प्रेम को
तो समझदारी भी नहीं थी।
और जब देखा मुड़कर इस दुनिया को तो
तो दुनियादारी भी नहीं थी।
माना की प्रेम-भाव रूपी हवा
के ना चलने के अभाव में भी
मैं जीवन रूपी पतंग को ऊंचा उड़ाने की कोशिश कर रही थी,
पर जब जरूरत थी केवल प्रेम-रूपी हवा की
तो अचानक इस दिल में प्रेमवर्षा ही होन पड़ी थी।
और जब उस वर्षा की पहली बूंद पड़ी मेरे कलेजे पर
तो मानो मैं पर लगाए
सोच की आनंदमई प्रेमवर्षा में डूबने लगी।
पर एहसास तो उड़ने का ही हो रहा था।
क्या करती मैं,
क्योंकि जब पहली बार जाना मैंने प्रेम को
तो समझदारी भी नहीं थी
और जब मुड़कर देखा इस दुनिया को
तो दुनियादारी भी नहीं थी।

प्रेरणा बठोले
द्वितीय वर्ष

बावला दिमाग

बिना पढ़े, कुछ लिखा ना जाए,
बिना लिखे कुछ, रहा ना जाए।
बिना पढ़े, समझ ना आए ,
बिना समझे, लिखा ना जाए।
बिना पढ़े, बोला ना जाए,
बिना बोले, कुछ समझ ना आए।।

सोनिक
प्रथम वर्ष

दोस्ती

फिर से बच्चा बनने को दिल चाहता है।
खुली किताब पढ़ने को दिल चाहता है।
क्यों हम यूँ बड़े हो गए?
दिल वापस बचपन में जाना चाहता है।
सच्ची थी उस वक्त की बातें
सच्चा था वो खिलौनों से खेलना
ना मतलब के दोस्त होते थे,
ना मतलब की दोस्ती,
बस एक बात थी कहनी
बचपन तो बचपना था।
वो अपना याराना था,
वो दिन बहुत पुराना था।

वो फूल से प्यारे हाथ थे,
वो अपना दिल बचकाना था।
नादान थी सारी गलतियां
और वो भोला-सा मुस्काना था।
गलती पर हम डरते थे,
फिर भी वही गलती हम रोज़ करते थे।
अब फिर से मुझे बच्चा बना दो,
क्योंकि मैं बच्चा ही प्यारा था ।

प्रियंका सिंह
द्वितीय वर्ष

मैं कौन हूं?

मैं प्रश्न करती हूं, मैं कौन हूं?
गर्भ में ही सहम जाती हूं,
कोई कहता है, "सर पर बोझ बढ़ेगा",
और कहीं से आवाज़ आती है, "चिंता भी तो बढ़ेगी।"
किस्मत से दुनिया में आ गयी तो,
हर एक अवसर से दूर रखा जाता है।
हमेशा नीचा दिखाया जाता है,
एक कदम आगे बढ़ाओ
तो चार कदम पीछे खींच लिया जाता है,
आखिर क्यों? मैं प्रश्न करती हूं?
क्या मैं मनुष्य नहीं?
क्या मेरा अस्तित्व नहीं?
क्या मुझमे संवेदना नहीं?
किस चीज़ की कमी है आखिर, मैं प्रश्न करती हूं।

जैसे ही होश संभालती हूँ,
हाथ पीले कर,
मुझे एक अनजान नगर में भेज दिया जाता है।

इतनी जिम्मेदारियों से बांध दिया जाता है,
कि मैं, अपने अस्तित्व के बारे में सोच ही न पाऊं,
आखिर ऐसा क्यों?
मैं प्रश्न करती हूं??

ये जानती हूं
कि इस पुरूष प्रधान समाज में मेरा ये प्रश्न निरुत्तर है,
फिर भी मैं प्रश्न करती हूं?

मनीषा
तृतीय वर्ष

पुराना रिश्ता

बचपन का अंजाना रिश्ता,
वो बड़ा पुराना रिश्ता।
क्लास में सबका उधम मचाना,
सबका साथ में पकड़ जाना।
पानी का बहाना लेकर,
स्कूल का पूरा चक्कर लगाना।
टीचर का क्लास में आना,
हम सबका उन्हें प्रणाम करना।
कार्य पूर्ण ना होने पर,
सबका साथ में मुर्गा बनना

बचपन के वो दिन,
एक-एक करके यूं घटते जाना।
बचपन का अंजाना रिश्ता।
वो बड़ा पुराना रिश्ता।।

निशा
प्रथम वर्ष

आजादी

ये जानकारी रह गई किताबी,
कि कैसे मिली हमें आजादी

किताबों में छपकर रह गए स्वतंत्रता सेनानी,
उनकी संघर्ष, त्याग और बलिदान से आधी जनता है बेगानी।

भोले भारतवासी भ्रमित भारत में जीते हैं,
जो जवानों से अनभिज्ञता में आज़ाद देश का पानी पीते हैं।

उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी में अंग्रेजी शासन रोक न पाए जिनके विरोधी स्वर,
आज आदमी के बीच उन वीरों की गुंजार तो है किंतु केवल क्षणभर ।

सब आज़ादी के इस राष्ट्रीय पर्व को जानते हैं ज़रूर,
पर परिचित नहीं उनसे जिनके कारण ही ये दिन है मशहूर।

गए भूल भगत, मंगल, महात्मा, बाल, बोस, आजाद को,
जिनके ज़ोर पर आज तुम कहते हो कि तुम आज़ाद हो।

श्रुति
द्वितीय वर्ष

कॉलेज के सपने

कॉलेज के सपने, सपने रह गये।
सोचा था कुछ, कुछ और ही हो गए।
कॉलेज के सपने, सपने रह गए।।
सोचा था कॉलेज में धूम मचेगी,
उन धूम के बदले जूम ही आ गए।
कॉलेज के सपने, सपने रह गए।।
सोचा था कॉलेज में फेस्ट मनेगी,
उन फेस्ट के बदले टेस्ट आ गए
कॉलेज के सपने, सपने रह गए।।
सोचा था कॉलेज में ख़्वाब बनेंगे,
उन ख़्वाबों के बदले ख्याल रह गए।
कॉलेज के सपने, सपने रह गए।।

प्रेरणा झा
तृतीय वर्ष

कर्मचक्र

शहर के झुग्गी - झोपड़ी वाले इलाके की दूसरी गली में कूड़े के ढेर के पास लोहे की टिन से बना एक चारदीवारी कमरा, जिसकी छत से पानी की बूँदें

टपकती हैँ और बरसात का मौसम वहां रहने वाली बूढ़ी माँ के लिए सुहानी ऋतु न होकर भयानक दृश्य बन जाता है। दरअसल, ये बूढ़ी माँ इन शहर की झुग्गियों में लगभग चालीस वर्षों से रह रही हैं। सफ़ेद धोती लपेटे, उलझे बाल, और हाथ में सहारे के लिए एक लाठी लिए हुए रोज सुबह लोगों के घर बर्तन धोने का काम करती। वहां से खाने के लिए मालकिन कुछ खाना दे देती हैँ और पहनने के लिए कुछ कपड़े। उसी में बूढ़ी माँ का गुजारा हो जाता है।

हुआ यूं, बुढ़िया माँ का एक बेटा था जो कुछ साल पहले पढ़ाई - लिखाई कर काम की खोज में प्रदेश गया हुआ था। परन्तु आज तक उसका न तो कोई पत्र आया ना वो खुद। बुढ़िया माँ रोज़ उसकी राह देखती रहती थी। दिन बीतते जा रहे थे और उसकी तबीयत भी बिगड़ती जा रही थी। अब ना तो उसको कोई सहारा था ना बेटे का पता।

एक दिन बुढ़िया माँ भोर में अपने चबूतरे की सफाई कर रही थी। एकाएक एक छोटा-सा बच्चा जो देखने में नौ-दस साल का मालूम होता है, वहां आकर बुढ़िया माँ के पास आकर खड़ा हो गया। तभी बुढ़िया के कानों में एक आवाज़ आयी - 'माँ कुछ खाने के लिए है?" बुढ़िया ने अपनी कमजोर आँखों से सामने देखा और कहा -"नहीं बेटा अभी तो भोर हुई है, कुछ बनाया ही नहीं सवेरे -सवेरे।" फिर उसने बच्चे की तरफ देखा। वह बच्चा एक भिखारी था जिसने हाथ में एक झोली ली हुई थी। उसका रूप देख बुढ़िया को उस पर तरस आ गया और चाय के लिए जो मालकिन से दूध मिलता था वह उसे दे दिया। ऐसा वह रोज करने लगी। बच्चा रोज उस दूध को ले जाता और जाकर बाज़ार में बेच देता उससे मिलने वाले पैसों को अपने पास इकट्ठा करता रहता।

कुछ समय बीत गया बुढ़िया अपने घर के दरवाजे पर दूध का गिलास लेकर खड़ी रही मगर उस दिन कोई नहीं आया। ना अगले दिन, ना उससे अगले दिन। अब वह पहले की तरह अपना जीवन बिताने लगी। समय अपनी रफ़्तार से चलता गया। बुढ़िया माँ अब बीमार रहने लगी। बच्चे के आ जाने से उसका मन बंट जाता था और वह उसमें अपने बेटे की झलक देख पाती। परन्तु अब उसके

पास जीवित रहने के लिए कोई लक्ष्य नहीं था। अकेलेपन ने उसे घेर लिया । एक दिन उसे दिल का दौरा पड़ गया। पड़ोसी उसे अस्पताल तक ले गए। इलाज़ शुरु हुआ तो पता चला बहुत सारे पैसों की जरूरत पड़ेगी तभी इलाज़ संभव है। इतने सारे पैसे वो कहाँ से लाती वो तो बहुत गरीब थी। अचानक एक डॉक्टर आगे आया, उसने कहा कि "आज से माताजी का सारा खर्चा और इलाज़ का खर्चा मैं उठाऊंगा, अब से ये मेरे साथ रहेंगी।" यह सुनकर बुढ़िया चौंक गयी। और कहा "बेटा तुम्हारा खूब आभार, मुझे आज महसूस हुआ कि लोगों में दया की भावना आज भी मौजूद है।" यह सुनकर डॉक्टर साहब ने कहा -"अरे नहीं माँ, धन्यवाद तो मुझे आपका करना चाहिए।" तभी बुढ़िया की साँसे थमने लगी और तभी डॉक्टर ने उनका इलाज़ करने की मंजूरी दी। और फ़ौरन उनका इलाज शुरु हुआ।

तत्पश्चात, बुढ़िया माँ का इलाज़ सफलतापूर्वक हो गया। अब वह स्वस्थ हो रही थी। वह डॉक्टर दिन रात उनकी सेवा करता रहता। अब वह स्वस्थ हो रही थी। एक दिन बुढ़िया ने उससे फिर पूछा, "बेटा तुम कौन हो? कहाँ रहते हो?" डॉक्टर ने बुढ़िया माँ की तरफ देखा और मुस्कुराने लगा। तभी अचानक, उसका जरूरी फोन आया और वह जरूरी काम से अस्पताल चला गया ।
आखिर कौन था ये डॉक्टर? उसका बेटा? वो भिखारी लड़का? या कोई और?
कहीं यह वह बच्चा ही तो नहीं?
शायद!!

कुसुम लता
द्वितीय वर्ष

यादें

यादें, यादें और ये यादें क्या कहूं इनके बारे में,
जिनमें हर दिन मैं डूबती हूं,
चाह कर भी उठ नहीं पाती, बस उन्हीं से गुजरती हूं।

वर्तमान से ज्यादा यादों में जीती हूं,
क्योंकि समझ नहीं आता कि,
जिंदगी यादें हैं या यादों में ही जिंदगी है।
यादें, यादें और ये यादें क्या कहूं इनके बारे में?
बस यूं ही गुनगुनाती रहती हूं उन लम्हों को,
कि ये आंखें नम हो आती हैं।
बूंदें कम गिरती हैं, वो नदी बनकर बह जाती हैं।
चाह कर भी रोक नहीं पाती हूं इन्हें,
क्योंकि ये यादें भी अपनों से दूर जाने पर ही आती हैं।
ख्वाहिशों का पिटारा नहीं, यादों का भंडार है।
कैसे मिटायेंगे ये यादें,
यही तो अपनों का साथ है।

एकता
तृतीय वर्ष

रविवार

रविवार का दिन
सुबह उठते हर चीज नई
दिन भर हैं काम कई
क्योंकि यह है, रविवार का दिन
उत्साहित हो उठता है दिल
हफ्ते में एक बार आता है।
मन को खूब लुभाता है।
न पढ़ना ,न पढ़ने जाना है,
बस दिन भर पकवान है खाना।।

मोहिनी शुक्ला
प्रथम वर्ष

मेरी भावनाएं

अक्सर स्वयं की भावनाओं को व्यक्त करने में,
मैं शब्दों का गलत चुनाव कर लेती हूं।
जो कहना चाहती हूं,
वो दूसरों तक पहुंच ही नहीं पाता।

प्रत्येक बार, प्रत्येक जगह,
मेरी उचित भावनाओं को नहीं समझा गया।
केवल मेरे द्वारा बोले गए शब्दों में ही,
सारी बातें, भावनाएं, ढूंढ़ ली गईं।

जब-जब भावनाओं को ग़लत समझा गया,
मैं वहीं खड़ी रही।
अपनी भावनाओं को,
दूसरों तक पहुंचाने के लिए,
अनेक उल-जुलूल शब्द ढूंढ़ती रही।
पर आज तक!
उचित अवसर पर,
उचित शब्दों में,
स्वयं की भावनाओं को,
नहीं व्यक्त कर पाईं हूं।
जो दूसरों ने मेरे शब्दों द्वारा अनुमान लगाया,
वही सत्य हो गया।
मैंने भी उसे अपनी ही,

भावनाएं होने की स्वीकृति दे दी।
और स्वयं को इस बात से संतुष्टि दिलाई,
कि ईश्वर सब जानता है।

काश! कि ईश्वर सब नहीं जानता।
और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का,
पूरा दारोमदार स्वयं पर होता।
तो कदाचित स्वयं की भावनाएं ,
बेहतर ढंग से व्यक्त हो पातीं।
और शब्दों का चयन भी,
उसके अनुसार होता।

सोनम यादव
तृतीय वर्ष

भारत माँ की आँखों के तारे

भारत माँ की आँखों के तारे,
नन्हें-मुन्हें, राज-दुलारे,
जैसे मैंने तुमको संवारा,
वैसे ही तुम देश संवारों।

ये जो है छोटा-सा बस्ता,
इल्म के फूलों का गुलदस्ता,
इसमें छिपी है हर सच्चाई,
अपना सुख, औरों की भलाई,

भारत माँ की आँखों के तारे,

नन्हें-मुन्हें, राज-दुलारे,
जैसे मैंने तुमको संवारा,
वैसे ही तुम देश संवारों।

ये जो संसार तुमने बनाया, तुमने सजाया,
इस संसार में दुःख बहुत हैं, जुल्म बहुत हैं,
इस संसार मे बलि-बलि जाऊँ,
हर झूठ से टकरा जाऊँ।

भारत माँ की आँखों के तारे।

कनिका
द्वितीय वर्ष

प्रेम में एक स्त्री

प्रेम में समर्पित स्त्री का मन,
सदा निश्छल होता है।
दिशा जो मिले, वो बिना बाधाओं का,
रोना रोए, सुगमता से बहती चली जाती है।
और प्रेम में सताई हुई स्त्री?
बिखरकर, मेघ से नितांत गिरती बूंदों जैसी हो जाती है।
अपनी पहचान को तलाशती हुई,
मगर हर क्षण बनती-मिटती है।
दोनों ही परिस्थितियों में 'मौन' का दुर्लभ स्थायित्व होता है।
पर इसके रुप बदलते हैं।

शान्या दास
तृतीय वर्ष

बचपन

बचपन का एक जमाना था,जिसमें खुशियों का खजाना था।
नानी-दादी की कहानियाँ थी, मां-पापा का प्यार था।
स्कूल से आते वक्त दोस्तों का साथ था।
घर के खाने में अलग ही स्वाद था।
बीत गई वो बचपन जिसमें खुशियाँ हजार थी।
बहुत याद आती है वह बचपन जिसमें सभी का प्यार था।

स्मिता राज
प्रथम वर्ष

प्रकृति

कभी पत्ते झड़ते हैं, कभी फूल खिलते हैं, यह मौसम भी विचित्र है,
जिस भी ओर देखूं प्रकृति एक सुन्दर चित्र है।
इतनी मनमोहक सुगन्ध प्रकृति में घुला जाने कौन-सा इत्र है,
एक प्रकृति ही तो हमारे जीवन भर की मित्र है।

सिमरन
प्रथम वर्ष

मैं कलरव हूं

वो मुझे! अपनी उन रूढ़ी बेड़ियों में जकड़ने की कोशिश करेंगे,
मैं अपने ख्यालों के दम पर, हर बार उनसे उड़ने की कोशिश करूंगी ।
वो अपनी विचारधाराओं से मेरे पंख कुतरने की कोशिश करेंगे,
मैं अपने उन्मुक्त कदमों से चलने की कोशिश करूंगी।

मैं कलरव हूं जनाब , खुद से कभी ना रुकने का वादा करूंगी।

वो अपनी निगाहों से मुझे जलील करने की कोशिश करेंगे,
मैं अपने विश्वास से,अपने कदमों की पकड़ को और मजबूत करती आगे बढ़ूंगी।
मैं कलरव हूं जनाब, मैं खुद से कभी ना झुकने का वादा करूंगी।

वो चाहेंगे, मुझे अपनी बातों से गिराना,
लेकिन, मैं तब भी अपने साहस के दम पर,
पैरों में जकड़ी उन बेड़ियों से एक पंछी की तरह उड़ने की कोशिश करूंगी।
मैं कलरव हूं जनाब, खुद से कभी ना नजरें चुराने का वादा करूंगी।

वो बेबस कर देंगे मुझे अपनी ही निगाहों में झुकने को,
लेकिन मैं तब भी निरंकुश हो कर, अपनी स्वाधीनता के लिए प्रयत्न जारी रखूंगी।
हां, मैं कलरव हूं जनाब! उन खुले आसमानों में ऊंचाइयां छूने की कोशिश करूंगी।।

जिज्ञासा पांडेय
तृतीय वर्ष

एक भीड़

एक भीड़ देखी मैंने
कुछ लोग एक तरफ भाग रहे थे।
मैं सोच में पड़ गई ऐसा क्या हुआ जो लोग भाग रहे हैं,
भीड़ कुछ एक से लोगों की थी,
गरीब नि:वस्त्र बच्चो की थी,
मैले कपड़े पहने आबरू को बचाए औरतों की थी,
कुछ बूढ़े लोगों की तो कुछ अपंग लोगों की थी।
शायद आपने भी देखी होगी, ऐसी भीड़ कभी राह मैं चलते
हां, जनाब बिलकुल सही सोचते हैं आप।

वो भीड़ लाल बत्ती पर रहने वाले गरीबों की थी।
ठंड में कांपते जनता की थी,
मैं जहां खुद को ढाके चार वस्त्रों में खड़ी थी,
वहां वो बच्ची, हां वो छोटी-सी बच्ची महज 1 साल की
एक फटे चादर में पड़ी थी।
आंखों से आंसूओं की कुछ बूंदें मेरे चेहरे पर पड़ीं,
मैं विचारहीन होकर उसको देखने लगी।
वो मेरी छोटी बेटी के समान थी,
जो अभी कंबल में सोए गरम-गरम दूध पी रही थी,
और उस बच्ची को एक छत तक नसीब नहीं थी।
फिलहाल वो भीड़ उन गरीबों की थी,
जिनको किस्मत की लकीरें भी नसीब नहीं थी।
जी जनाब, वो भीड़ खाने के लिए खड़े भीखमंगों की थी।

अंजलि पाल
द्वितीय वर्ष

नाम रोशन

मम्मी का प्यार, पापा का सहारा,
नगर भैया तुम्हारे सपोर्ट ने गार्गी में उतारा।
मैं तो हार कर सब कुछ खत्म समझती थी,
पर तुम्हारे दिलाए विश्वास ने मुझे निखारा।
जैसे हर कठिन घड़ी में तुम बने रहे मेरा सहारा,
पूरे जीवन बनाए रखना तुम अपनी आंखों का तारा।
वादा करती हूँ,
गलतियों से सीख कर,
जरूर करूँगी रोशन नाम तुम्हारा।।

प्रियांशु कुमारी
प्रथम वर्ष

पूछा जो मैंने खुदा से

पूछा जो मैंने एक दिन खुदा से
अंदर मेरे ये कैसा शोर है?
हंसा मुझ पर फिर बोला,
चाहते तेरी कुछ और थी,
पर तेरा रास्ता कुछ और है।
रूह को संभालना था तुझे,
पर सूरत सँवारने पर तेरा जोर है।
खुला आसमान, चाँद, तारे चाहत हैं तेरी,
पर बंद दीवारों को सजाने पर तेरा जोर है।
सपने देखता है खुली फिजाओं के,
पर बड़े शहरों मे बसने की कोशिश पुरजोर है।

जन्नत फरजाना नाहिद
प्रथम वर्ष

क्या शब्द लिखूं?

क्या शब्द लिखूं मै उन बच्चों पर?
जिनका वसन्त ही खो गया,
जिनका बचपन ही संघर्ष बन गया ,
और रोटी के लिये भटकना आदत बन गयी।
क्या शब्द लिखूं मैं उन बच्चो पर?
जिनके लिये कूड़ों का ढेर ही स्वर्ण बन गया,
नंगे पांव दौड़ना ही पसन्द बन गया,

और पूर्णत: एक वक्त का भोजन भी स्वप्न बन गया।
क्या शब्द लिखू मैं, उन बच्चों पर?

साक्षी मौर्य
प्रथम वर्ष

मेरे सपने

सूर्योदय होते ही उठ जाना,
सूर्यास्त होते ही जल्दी घर को आना,
क्या ये चीजें वाकई कामयाब बनाती हैं हमें?
शायद हां!
तभी तो मैं घर में सबसे चहीती हूं।
वे कहते हैं, मैं उनकी लाडली,
उनके कहे अनुसार चलने वाली,
ये बातें मुझे अच्छी लगती थीं,
पर अब नहीं,
मेरे अपने सपनों का क्या?
जो मैंने अपने सहेलियों के साथ
स्कूल जाते समय उन्हें बतलाएं थे।
उस दिन जब हमने अपने-अपने सपनों की बातें की थी,
क्या कहूंगी मैं उनसे?
शायद! अब वो हमसे पूछे ही ना,
वो भी कहां कर पाईं,
अपने सपने पूरे।
अपने मेंहदी में कैसे चहक रही थीं वह।
क्यूं भूल गई अपने सपनों को वह?
शायद! वह भी घर में सबसे चहीती होगी।

काजल कुमारी
तृतीय वर्ष

कुछ ऐसा है मेरा परिवार

वो प्यार भरी मुस्कान उनकी जो हर दम मेरा होंसला बढ़ाती हैं,
वो खूबसूरत निगाहें उनकी जिन्हें महसूस करते ही
मेरी आँखों में आँसू लाती है, वो कौन हैं?
वो मेरी माँ हैं,
जो अक्सर मुझे जिंदगी मे जीने के जज़्बे सिखाती हैं।
उनकी वो थकान भरी बातें, पर आँखे अक्सर
जिंदगी अपने दम पर जीने का हौंसला दिखाती हैं।

प्यार से जब उनको पापा बोला
तो मानो दिल की आधी मेरी थकान मिट जाती है।
ऐसे हैं मेरे पापा जो सुबह उठते ही
मुझे जिंदगी जीने की एक नई राह सिखाते हैं।

वो नटखटी बहनें मेरी जो अक्सर करती हैं शरारत मेरे संग,
लड़ झगड़ लूं मैं उनसे जितना भी पर वो बहनें मेरी
मुझसे कभी रूठ ना पाती हैं।
वहीं तो हैं वो मेरी प्यारी बहनें जो अक्सर मुझे
जिंदगी खुलकर जीना सिखाती हैं।

वो इकलौता शरारती भाई मेरा,
जो हमेशा गलतियां कर जाता है,
न चाहते हुए भी वो कई बदमाशियां कर जाता है,
वो ऐसा है कि अगर मैं गले लगाकर प्यार से उसका हौंसला बढाऊं,
तो वो मेरे संग अपने आँसू ना रोक पाता है।

शालू
द्वितीय वर्ष

माँ

मां! तेरी ख्वाहिश मैं हर समय करूं।
सुबह न देखूँ मां, न देखूं शाम,
हर दिन तेरे नाम मां।
तेरे ऐसे काम क्या लिखूँ?
तेरे लिए सब कुछ छोटा है।
तेरे लिए तो सब चीज समर्पण कर दूं।
मां! तेरी खवाइश में हर समय कर दूं।
तुने मुझे किस तरह पाला, ये तो सब भगवान जानें।
पर मैं तेरे लिए सब कुछ कुर्बान कर दूं,
मां तेरी ख्वाहिश में हर समय कर दूं।
तेरी खूबसूरती पर क्या लिखूँ?
तेरे नाम में ही खूबसूरती है
और क्या कहूं, मां के लिए कोई शब्द ही नहीं बनाया
ऐसा भगवान ने तुझे और तेरा नाम बनाया।

खुशी तोमर
प्रथम वर्ष

आज़ाद परिंदा

आज़ाद हूं, मुझे कैद न करो इस पिंजरे में।
कहीं ऐसा न हो कि मैं उड़ना ही भूल जाऊं।
मुझे इस कदर न सताओ
कि मेरी जीने की इच्छा ही मर जाए।
मैं एक परिंदा हूं, उड़ जाने दो मुझे।
इस गगन में आज़ाद हूं, आज़ाद रहने दो मुझे ।
आसमां की ऊंचाइयों को छू लेनें दो मुझे।

जिंदगी अभी बाकी है दोस्त,
बिन पंखों के कैसे उड़ान भरूंगी?
खुली वादियों के बीच छोड़ दो मुझे,
इन हवाओं के बीच बह जाने दो मुझे,
इस पिंजरे की कैद से आज़ाद हो जाने दो मुझे।

जया शर्मा
तृतीय वर्ष

वक्त कहां

वक्त कहां? अब कुछ पल दादी के कहानियों और किस्सों का स्वाद चखू
वक्त कहां? दादा के अनुभव, फटकारें और डांट सहूं।
वक्त कहां है, मम्मी-पापा के दुख- दर्द चुराने का,
और बहन -भाइयों के साथ लड़ने- झगड़ने का।
रिश्तों की गर्माहट पर कब ठंडी रूखी बर्फ जमी,
कच्चे -कच्चे बंधन में कब, फिर लौटेगी वही नमी।
सूने-से इस कमरे में कब तैरेंगी मीठी यादें,
बिछड़े साथी कब लौटेंगे,
वही पुराने अपने वादे।
कब आएगा समझ मुझे क्या जीवन का असली मतलब,
खुशियों को आकार मिलेगा होंगे सपने अपने जब।
कभी मिले कुछ वक्त तो, ठहर सोचना तुम कुछ पल,
यूं ही वक्त कटेगा या कुछ बेहतर होगा अपना कल।।

वर्षा सिंह
प्रथम वर्ष

शहीदों को शत् शत् नमन

सब ओर एक खामोशी सी छा गयी,
जब मेरे घर उनके ना रहने की खबर आ गयी।
मां के पैरों तले की जमीं,
मां को क्षण भर में खा गयी।
पापा जी की आंखें ,जैसे कोई धोखा खा गयी।
ना मालूम पड़ा ,क्या दौर गुजरा उन जवानों पर।
मां के उस लाल ने,क्या-क्या सपने सजाए होंगे?
घर आकर करने वाले काम भी बतलाए होंगे।
बैठी थी उम्मीद में वो पगली,
मेरे जीवन का सार, मुझ तक फूल भिजवाएंगे।
पर ना जाने वह कब लौट कर आएंगे?
वो बहन भी बहुत रोई है,
बार-बार भईया को पुकार।
उसकी आंखें भी नम हुई है।
बहन के हाथों में जो हल्दी लगने वाली थी,
वही भाई को रस्में निभानी थी।
हाथ पीले करने अब कौन भाई आएगा,
बहन को कौन भाई अब डोली में बिठाएगा।
छोटे भाई ने एक बात बतलायी थी,
बड़े भाई के साथ जाकर,उसने भी अपनी फीस भरवानी थी।
भाई अब सो गए, ना जाने कहां वो खो गए।
एक बार आ जाओ लौट के,
पापा, अब मुझे कोई गुड़िया नहीं चाहिये,
मुझे बस मेरे पापा की गोदी ही चाहिये।
कितना कुछ सिमट गया चंद पलों में।

कितने घरों के दीपक बुझ गये ,कुछ ही क्षणों में।
खुद की जान गंवा कर, हमें चैन से सुला गए हैं।
ये वीर जवान, मुझे फिर से रुला गए हैं।
जीवन में सब कुछ बिखर-सा जाता है,
मां का लाल जब कहीं दूर चला जाता है।
एक यही रिश्ता ,आज भी कायम है,
धरती मां की रक्षा के खातिर।
अनेकों बेटे आज फिर घायल हैं।
शत् शत् नमन मेरे उन नौजवानों को,
जिसने आज फिर हमारे जीवन के खातिर,
अपना जीवन दांव पर लगाया है।

पूजा
तृतीय वर्ष

प्रकृति

कितनी आकर्षक है, कितनी मनमोहक है,
हृदय को शांत करने वाली घोतक है।
जिसे देख तनाव कहीं दूर भाग जाता है,
पेड़ पर बैठा वह पक्षी मुझे अपने पास बुलाता है।
उस हरियाली ने मन को मंत्र-मुग्ध कर दिया,
ना जाने दुनिया ने प्रकृति को क्यों लुप्त कर दिया।
वो सुगंधित हवाएं आज विषैली हो गईं,
हे भगवान! ये दुनिया क्यों इतनी मैली हो गई?
आज भी याद है वो बरगद के पेड़ का झूला,
जिसे हर किसी ने अपने बचपन में झूला।
जिसे हम अपनी मां कहते हैं उसी का सब कुछ छीन लिया,

क्यों न सोचा करनी का फल अवश्य ही मिलता है,
हर किसी को उसका लेखा जोखा अवश्य ही मिलता है।
जब वह तांडव करेगी, तब सब पछताएंगे,
अभी भी समय है
वरना एक ही झटके में सब समझ जाएंगे।

कीर्ति मिश्रा
प्रथम वर्ष

आगे बढ़ चले हम

यूं ही इस बेगानी दुनिया में
अपनों का साथ ले आगे बड़ चले हम ।
एक नयी जिंदगी लिये आगे बड़ चले हम।
यूं नन्हें-नन्हें कदमों से ये संसार देखने चल पड़े हम।
मां की ममता, पापा का दुलार ले आगे बड़ चले हम ।
अपनों की डांट फटकार को संजोए आगे बड़ चले हम ।
दादा-दादी की दी सीख ले इस नयी दुनिया में
अपनी एक अलग पहचान बनाने चल पड़े हम ।
दोस्तों के साथ की मौज-मस्ती आज बटोर के चल दिए हम।
वो बचपना छोड़ आगे बड़ चले हम।

हिमानी बैसोया
प्रथम वर्ष

समय का सदुपयोग

कहते हैं समय सबसे बलवान व कीमती होता है तथा यह सबके लिए समान होता है तथा किसी के लिए कभी नहीं रुकता है। समय अच्छे से अच्छे व बुरे से बुरे

व्यक्ति को घुटने टीका देता है इसलिए तो सबसे बलवान कोई नहीं। समय का जो व्यक्ति सदुपयोग करता है वो जीवन में सफल होता है, कामयाबी के मार्ग पर रहता है। तथा इसका दुरुपयोग जो करता है वह निराशा की प्राप्ति करता है। समय तो सबके लिए समान होता है परंतु जो इसकी गंभीरता को समझता है जो अच्छे कार्य का चयन करता है जिसका मार्गदर्शन सही होता है। भले ही कितनी भी कठिनाइयां आए परंतु डटकर उसका सामना करता है उसे अंत में आनंद की प्राप्ति होती है और उसके आगे का जीवन सुखमय व्यतीत होता है। समय के सदुपयोग को जानना अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है और विद्यार्थी जीवन में इस बात को समझना सबसे जरूरी होता है क्योंकि विद्यार्थी ही हमारे आगे आने वाले भविष्य है। आगे की दुनिया उन्हें के हाथों में है यदि वह समय की गंभीरता को समय रहते समझे उसके सदुपयोग को समझे तो वह एक अच्छे नागरिक तथा एक कामयाब मनुष्य अवश्य बनेंगे साथ ही अपने व समाज का कल्याण कर पाएंगे। विद्यार्थी जीवन बच्चे नासमझ होते हैं उन्हें हर वह बुरी चीज करने में आनंद प्राप्त होता है जो उनके लिए सही नहीं है तथा हर अच्छी चीज उन्हें बुरी लगती है क्योंकि उनमें परिश्रम व कठिनाइयां होती है जिससे हमारा मन व शरीर दूर रहना चाहता है। वह केवल मनोरंजन है चीजें करना चाहता है परंतु इस बात का एहसास हमें तब होता है जब हमारे हाथों से काफी चीजें छूट चुकी होती है। हर वह चीज जो हम कर सकते थे वह हम केवल अपने आलस्य व अपने मनोरंजन के लिए छोड़ देते हैं। जो समय का उपयोग सही रूप से करता है वह हमेशा सफल होता है और जो इसकी महत्वता को नहीं समझ पाता बाहरी आकर्षण व मनोरंजन के लिए सरल मार्ग को चुनता है वह आगे आने वाले समय में अत्यधिक कष्ट का उपभोग करता है। समय बहुत बड़ा ज्ञानी होता है हर वक्त ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करता है जिसका समाधान करते-करते व्यक्ति को अपने आप उससे कुछ ना कुछ सीख अवश्य प्राप्त होती है जो अपनी गलतियों से सीखता है वह दोबारा फिर नहीं गिरता,सीखने का सबसे उत्तम मार्ग है "प्रयास" हमें सदा प्रयास करते रहना चाहिए भले ही हर बार कामयाबी ना मिले परंतु सीख अवश्य ही दोनों बार प्राप्त होती है चाहे आप सफल हो या असफल, परिणाम की प्राप्ति तो सदैव होगी और यह हम पर निर्भर करता है की हम उसे सफलता का दर्जा दे या असफलता का। यह तो हर व्यक्ति के मानसिकता पर ही निर्भर करता है।

प्रियंका मण्डल
प्रथम वर्ष

उड़ान

एक जोड़ी अंबर मांग रही हूं,
सुनहरे सफ़र में अपनी उड़ान मांग रही हूं।

नेता तो आए झूठे वादों के साथ
अब उनके पीछे मैं अपनी परछाई मांग रही हूं।

इन हवाओं में ,
मैं फसलों की मुस्कान मांग रही हूं।

कल सड़क पर मिली थी एक बच्ची
उसके लिए पढ़ाई मांग रही हूं।

गरीब के घर के लिए चूल्हे की आग मांग रही हूं।

सब बोल रहे हैं हम विकास कर रहे हैं
पर इस विकास को देखने के लिए मैं अपने लिए आंखे मांग रही हूं ।

एक जोड़ी अंबर मांग रही हूं,
सुनहरे सफ़र में अपनी उड़ान मांग रही हूं।

लवली अप्राजिता
द्वितीय वर्ष

मेरी आँखों ने भी एक ख्वाब देखा है

एक मौके की तलाश है मुझे,
मुझे तो वक्त की इन बेड़ियों ने रोका है।
एक ख्वाब पूरा करना है मुझे भी,
मेरी आंखों ने भी एक ख्वाब देखा है।

कुछ बंदिशे हैं तो कुछ जिम्मेदारियां हैं, अभी मुझ पर,
वरना मैनें कब इन कदमों को रोका है
हां, मगर मौके की तलाश है मुझे,
मुझे बस वक्त की इन बेड़ियों ने रोका है।
एक ख्वाब पूरा करना है मुझे भी,
मेरी आँखों ने भी एक ख्वाब देखा है।

एक रोज कुछ सबसे अलग कर दिखाने की चाह है मेरी,
लेकिन ये कैसे भूल जाऊं कि
अभी शुरूआत सही लेकिन आसान नहीं है राह मेरी।
मगर उम्मीद है, ऐ खुदा! तुझसे,
हर मुश्किल मोड़ पर तू थामेगा बांह मेरी,
मुझे तो बस एक मौके की तलाश है,
मुझे तो बस वक्त की इन बेड़ियों ने रोका है
एक ख्वाब पूरा करना है मुझे भी,
मेरी आँखों ने भी एक ख्वाब देखा है।

टूटना नहीं है रुकना नही है मुझे इस बीच सफर में,
अभी सफ़र ये मेरा अधूरा है
लेकिन हासिल न हो जब तक मेरा मुकाम मुझे

जारी ये हौसला मेरा है।
बस एक मौके की तलाश में है मुझको,
मुझे बस वक्त की इन बेड़ियों ने रोका है
हां, एक ख्वाब पूरा करना है मुझे भी
मेरी आंखों ने भी एक ख्वाब देखा है।

नियाशा
द्वितीय वर्ष

वो लड़की

वो लड़की!!
क्यों वो ही दर्द सहे सारे?
क्यों वही सबको मजबूर दिखती है?
कुछ सहमी सी, कुछ डरी हुई सी,
देखो साहब वो लड़की खड़ी है।
मान, मर्यादाओं, का ध्यान रखे।
परंपराओ ,की बेड़ियों में बंधे।
रिश्तों की वो डोर कंसे,
फिर भी दुनियां वालों को वो ही मजबूर दिखे।
मुश्किलें, उसके हिस्से में छांट छांट कर लिखीं है।
कुछ सहमी सी, कुछ डरी हुई सी
देखो साहब वो लड़की खड़ी है।
क्यों वो दूसरों के सहारे जिए,
क्यों उसको दूसरों के उपर निर्भर रहना पड़े,
मां, बेटी, बीवी, बहन, इन्ही नामों से उसको जाना जाएं,
क्यों उसकी ख़ुद की पहचान नहीं है?
कुछ सहमी सी, कुछ डरी हुई सी,

देखो साहब, वो लड़की खड़ी है।
क्यों तुम उसको अपमानित करते हो?
क्यों उसको सबसे नीचा दर्जा देते हो?
मां के रूप में उसने तुमको जीवनदान दिया।
शरारत भरा सफ़र बहन के साथ ही तय किया।
बीवी बनकर उसने हर तकलीफ में हाथ बढ़ाया ।
बेटी के रूप में उसने सदा जिम्मेदारी का एहसास कराया ।
वो ख़ुद की पहचान बनाएगी,
आसमां में ऊंची उड़ान भर जाएगी।
देखेगा समाज ये सारा, वो किस मुकाम तक जाएगी।
मुश्किलों से आगे निकल कर, वो एक दिन आत्मनिर्भर कहलाएगी।
न सहमी हुई सी, न डरी हुई सी,
न वो अबला दिखती है,
देखो साहब! वो अब अपने पैरों पर खड़ी है।

अदिति शर्मा
तृतीय वर्ष

कैसे लिखूं?

क्या लिखूँ ,कैसे लिखूँ ,आरजू मदहोश है,
क्या लिखूँ , कैसे लिखूँ ,आरजू मदहोश है,
आसूँ टपकते हैं खत में, कलम खामोश है।

डोली
प्रथम वर्ष

हिन्दी की सुप्रसिद्ध कहानीकार मन्नू भंडारी जी का स्केच

अंतस करन (तृतीय वर्ष)

सह-संयोजक की कलम से...

युवा पीढ़ी की शिक्षा

युवा पीढ़ी किसी भी देश का भविष्य होती है। इस युवा पीढ़ी का जैसा मानस होगा, वैसा ही वह राष्ट्र, देश और जाति का स्वभाव होगा। युवा पीढ़ी को गढ़ने में शिक्षा ही अहम भूमिका निभाती है इसीलिए मनुष्य जीवन में विद्यार्थी जीवन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस समय का जो विद्यार्थी जितना बेहतर उपयोग कर लेता है, उतना ही उसका बेहतर भविष्य होता है। यह समय मनुष्य जीवन का निर्माण काल होता है। इस काल-खंड में जैसे आचार-विचार एवं संस्कार हमें मिलते हैं, वैसा ही हमारा स्वभाव एवं व्यक्तित्व निर्मित हो जाता है, इसलिए आज इसकी निर्मिति में भूमिका निभाने वाली शिक्षा-प्रणाली और मूल्य-व्यवस्था पर गंभीरता से हमें सोचने-समझने की जरूरत है। भारतीय संस्कृति के महान ऋषि-मुनियो ने इस जीवन के महत्व को गंभीरता से समझा और इसके लिए गुरुकुल प्रणाली विकसित की, जहाँ उसके शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध किया जाता था। गुरुकुल परम्परा लम्बे समय तक देश में चली। भगवान श्रीराम भी अपने भाईयों के साथ गुरुकुल में पढ़ने जाते हैं। भगवान श्रीकृष्ण भी गुरुकुल जाते हैं जहाँ सुदामा से उनकी मित्रता होती है, उस मित्रता के किस्से जगत-विख्यात हैं अर्थात इस काल में हुई मित्रता में बहुत आत्मीयता होती है।

आगे चलकर हमारे देश में तक्षशिला और नालन्दा जैसे अनेक महान विश्व-विख्यात गुरुकुल विकसित हुए। इन गुरुकुलों से पढ़े हुए विद्यार्थियों और पढ़ाने वाले शिक्षकों की हमारे समाज में बहुत इज्जत थी। धीरे-धीरे काल की गति विकराल होती चली गई और हमारा देश एक लम्बे काल-खंड के लिए गुलाम हो गया। देखते ही देखते हमारी स्वदेशी शिक्षा व्यवस्था की गुरुकुल परंपरा धीरे-धीरे नष्ट-भ्रष्ट हो गई। यह अपने आप नष्ट नहीं हुई,अपितु इसको जान-बूझकर इरादतन नष्ट किया गया। गुलामी के काल-खण्ड में ही हमारी वर्तमान आधुनिक शिक्षा-प्रणाली का पूरा ढांचा तथा तन्त्र विकसित हुआ है, जिसका स्पष्ट घोषित उद्देश्य ही 'मानसिक गुलाम' 'भाषिक गुलाम' एवं सांस्कृतिक

गुलाम पैदा करना था। यह काम बखूबी इस शिक्षा- व्यवस्था ने 1947 तक किया। लेकिन दुर्भाग्य से 1947 में मिली आजादी के बाद भी इस व्यवस्था' को पूर्णत: नहीं बदला गया, जिसका प्रतिफल आज हमें समाज में यत्र-तत्र- सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है।

क्या ऐसी शिक्षा-व्यवस्था जो हमारे अपने देश की मिट्टी के मानस के अनुकूल विकसित ही नहीं हुई है, वह हमारे अपने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को पूर्णत: विकसित करने में सहायक हो सकती है। अभी तक के लंबे अनुभव से मुझे ऐसा लगता है कि यह शिक्षा-प्रणाली अनेक विसंगतियों का शिकार हैं, जिसमें से सबसे बड़ी विसंगति है-व्यक्ति के व्यक्तित्व' निर्माण का एकांगी प्रयास। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास में बाधक है। इसमें छात्र आज सबसे ज्यादा पीड़ित और उपेक्षित है। उसके पास अन्त में बड़ी-बड़ी उपाधियाँ और व्याधियाँ तो होती हैं, लेकिन उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व खंडित सा नजर आता है। येन-केन-प्रकारेण उसके जीवन का लक्ष्य नौकरी बनाकर छोड़ देती है-यह शिक्षा प्रणाली। इसका तात्पर्य यह नहीं कि उसे रोजगारोन्मुख नहीं होना चाहिए,रोजगार देना भी शिक्षा का एक उद्देश्य होना चाहिए, न कि एकमात्र उद्देश्य। अपितु हमारी शिक्षा-प्रणाली ऐसी हो जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समग्रता में विकास करे, उनमें अनुशासन,कठिन परिश्रम और लग्न के साथ-साथ अन्य मानवीय गुणों का सहज विकास भी करे। आजादी के 75 वर्षों के बाद हमें अपने विद्यार्थियों के भविष्य को गढ़ने वाली शिक्षा-व्यवस्था पर गंभीरता से सोचना होगा, इसमें देश-हित में आमूल चूल परिवर्तन करने होंगे। आज हमारे देश में शिक्षा का पूरा तन्त्र लूट का गढ़ बन गया है, इसको कैसे समाप्त किया जाए इस पर गंभीरता से पूरे देश को सोचना होगा। यह व्यवस्था अगर नहीं बदली तो हमारे आने वाली पीढियों के भावी विद्यार्थियों का भविष्य कैसे होगा, यह हम आज के अधिकांश विद्यार्थियों को देखकर समझ सकते हैं।

डॉ श्रीनिवास त्यागी
(सह-संयोजक)
हिन्दी साहित्य परिषद

हिन्दी साहित्य परिषद द्वारा आयोजित कार्यक्रम

हिन्दी साहित्य परिषद द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की कुछ उम्दा तस्वीरें

संपादक मण्डल

मनीषा
तृतीय वर्ष

सोनम यादव
तृतीय वर्ष

गीतिका घई
द्वितीय वर्ष

प्रियंका मण्डल
प्रथम वर्ष

ग्राफिक डिजाइनर

कीर्ति मिश्रा
प्रथम वर्ष

सोनम यादव
तृतीय वर्ष

हिन्दी विभाग की तृतीय वर्ष की छात्राएं

हिन्दी विभाग की द्वितीय वर्ष की छात्राएं

हिन्दी विभाग की प्रथम वर्ष की छात्राएं

हिन्दी साहित्य परिषद की शिक्षक संयोजिका डॉ मीना के साथ में संघ-सदस्य तथा कक्षा-प्रतिनिधि

हिन्दी विभाग छात्र-संघ के सदस्य

हिन्दी विभाग कक्षा प्रतिनिधि

'विचारायन' पत्रिका संपादक मण्डल

हिन्दी विभाग टी-शर्ट

"कलरव" विदाई समारोह
हिन्दी विभाग